पं0 दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय तिलहर, शाहजहाँपुर

कुलगीत

अज्ञान तिमिर हरने को प्रतिपल, तत्पर विद्या भवन हमारा।
बहा रहा है ज्ञान, प्रेम और सौहार्द की अविरल धारा॥
तमस कलुष धुल जाता है,
ज्ञान की अमृत धारा में।
नया क्षितिज मिल जाता है,
नित नूतन श्रम की धारा में।
यहाँ की पावन धरती पर, हर पल ढलता व्यक्तित्व हमारा॥
बहा रहा है ....
राम-रहीम की पावनता से,
नित नूतन सजे चरित्र हमारा,
त्रिधारायें अभिषेक कर रहीं,
ऐसा है सौभाग्य हमारा।
सुरभित है आदर्शों से, पर्यावरण यहाँ का सारा॥
बहा रहा है ....
जीवन मूल्यों का श्रंगार यहाँ,
नव ज्ञान की जय जयकार यहाँ।
घने द्रुमों की शीतल छाया,
स्वर्णिम किरण वितान यहाँ।
ज्योति जलाकर विद्या की, भव सागर से मिले किनारा।
बहा रहा है ....
कण-कण यहाँ का गीत गाता,
त्याग का बलिदान का।
हर सबेरा संदेश लाता,
मानवता के त्रण का।
देशोन्नति में रहे समर्पित, यही रहा है लक्ष्य हमारा।
बहा रहा है ज्ञान, प्रेम और सौहार्द की अविरल धारा॥

पूर्व प्राचार्य डॉ0 शीला रानी खरे द्वारा रचित